पाठ–13
जो तुम आ जाते एक बार

मूल पाठ :–

जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करूणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग,
गाता प्राणों का तार–तार
अनुराग भरा उन्माद राग
आँसू लेते वे पद पखार!

प्रस्तुत अनुच्छेद में कवयित्री के हृदय की भावनाएँ एक विरहिणी नारी की भावनाओं के रूप में चित्रित हुई हैं। अपने प्रियतम की प्रतीक्षा में आतुर तथा वियोग से पीड़ित नारी उसके आगमन के लिए सुन्दर कल्पनाएँ करती है। प्रिय के आगमन के पश्चात जीवन की सुखमय अनुभूति की परिकल्पना विरहिणी को रामांचित कर देती है। कवयित्री उसके आने की कामना करते हुए कहती है कि यदि तुम एक बार आ जाते तो अनगिनत करूणा, भाव एवं संदेश तुम्हारे पथ में पराग बनकर बिछ जाते, जीवन में छाई उदासी समाप्त हो जाती और सर्वत्र वसन्त का उल्लास छा जाता।

कवयित्री अपने मन की करूणा का संदेश प्रियतम तक पहुँचाने को व्याकुल है। उसका कहना है कि तुम्हारे आने पर मेरे हृदय की न जाने कितनी करूणा और कितने संदेश फूलों के पराग के रूप में तुम्हारी राह में बिछ जाते। लम्बे समय से बिछड़े हुए प्रियतम के आने से प्राणों का तार–तार प्रेम के मतवाले पन का राग गा उठता। मिलन की खुशी में आँखों से छलकने वाले आँसू प्रियतम के चरण धो डालते।

कवयित्री अपने करूण भाव अपने प्रियतम तक पहुँचाकर उनका प्रेम और उनकी कृपा प्राप्त करना चाहती हैं, किन्तु यह करूणा और पीड़ा उसका व्यक्तिभाव नहीं है। सम्पूर्ण प्राणी जगत की पीड़ा और करूणा को आत्मसात कर कवयित्री ने उसे अपने हृदय की पीड़ा मान लिया है। इसी करूणा को प्रियतम के पथ पर पराग के रूप में बिछा देना चाहती है। पुष्प स्वयं कोमल है किन्तु पुष्पपराग जो कोमलतम है, उसे प्रियतम के पथ में बिछाने की कामना प्रेम भावना की अभिव्यक्ति का सुन्दर एवं उच्चतम स्वरूप हैं। उस प्रिय के आगमन की कल्पना का सुख इतना प्रसन्न कर देने वाला है कि प्राणों का एक–एक तार भावविभोर होकर प्रेम की मस्ती में गा उठेगा। प्रिय के मिलन से हृदय में आनन्द की जो लहर उत्पन्न होती है उसमें व्यक्ति की मनोदशा पागलों के समान हो जाती है और वह उन्माद से भर उठता है।

हृदय के करूणा भाव प्रिय से मिलन के क्षण में आँसुओं के रूप में पिघलकर आँखों से प्रवाहित होंगे, उन्हीं अश्रु जल से वह प्रियतम के चरण पखारने की इच्छा पूरी कर लेगी।

हँस उठते पल में आर्द्र नयन
धुल जाता ओठों से विषाद,
छा जाता जीवन में वसन्त
लुट जाता चिर संचित विराग।
आँखें देतीं सर्वस्व वार!

प्रियतम यदि आ जाते तो आँसुओं से भींगे नयन क्षण मात्र में हँस उठते। होठों पर छाई हुई विषाद की रेखा धुल जाती। यह जीवन जो प्रिय के विरह में पतझड़ के समान सूना और नीरस हो उठा था। वसन्त की सुषमा और सरसता से आच्छादित हो उटता। लम्बे समय से एकत्रित वैराग्य की भावना, जीवन के प्रति

उदासीनता यह सब कुछ लुट जाता, नष्ट हो जाता। प्रिय के आगमन से हर्षित होकर आँखें अपना सर्वस्व उन्हें न्योछावर कर देती।

प्रिय के आगमन से उत्पन्न उल्लास उपलब्ध नहीं है, कवयित्री ने उस उल्लास और प्रसन्नता की अभिव्यक्ति की है जो प्रियतम के आगमन की सम्भावना मात्र से उसके हृदय में उत्पन्न हुआ है। प्रेम में सब कुछ न्योछावर कर देने का भाव प्रेम के उच्चादर्श को प्राप्त करना है। प्रकृति में व्याप्त विराट सत्य जिसका आभास असीम और अज्ञात सत्ता के रूप में होती है। कवयित्री ने उसे मधुरतम रूप प्रदान कर उसके प्रति प्रेम भाव निरूपित किया है। इस प्रेम की राह में स्वयं का विसर्जन कर दिया जाए। इस दृष्टि से यह कविता मानवीय आदर्श को प्रस्तुत करने वाली सुन्दर कविता है।

महादेवी वर्मा